सनातन भारत ◆ जागृत भारत

विस्मृतिसे जागरणकी ओर

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

भारतका आत्मविश्वास एवं संकल्प लौटने लगा

महात्मा गाँधीके नेतृत्वमें भारतके आत्मविश्वास एवं संकल्पका पुनर्जागरण होने लगा। भारतकी सनातन सभ्यताके इस नवीन प्रस्फुटनको देखकर विश्वमें भारतके प्रति अनेक अपेक्षाओंका सञ्चार हुआ। विशेषतः यूरोपीय साम्राज्यसे त्रस्त एशिया एवं अफ्रीकाके लोगोंको भारत एक सशक्त प्रकाशपुञ्ज जैसा लगने लगा।

स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त हम विश्वकी उन सब अपेक्षाओंको साकार तो नहीं कर पाये। तथापि हमने अपनी सहज सम्पदासम्पन्न भूमि और विशिष्ट कौशलसम्पन्न समाजकी ओजस्विताको पुनः स्थापित करनेके प्रयास प्रारम्भ किये। भारतके कृषक अपनी भूमि एवं कृषिका परिष्कार करने लगे। भारतके शिल्पी एवं कर्मकार अपनी विश्वविख्यात दक्षताओंका पुनःस्मरण कर भारतके औद्योगिक उत्पादनको संवृद्ध करने लगे। राज्य प्रायः निष्प्राण हुई अर्थव्यवस्थाके मूल ढाँचेका पुनर्निमाण करनेकी ओर प्रवृत्त हुआ। नये राजमार्ग बनने लगे। नदियोंको स्वच्छ करने और जलमार्गोंको निर्बाधित करनेके कुछ प्रयास किये गये। सिञ्चाईके क्षेत्रमें कुछ बड़े निर्माण प्रारम्भ हुए। लौह और इस्पात बनानेके कुछ बड़े संयन्त्र स्थापित हुए।

विदेशी शासन कालमें अत्यन्त विकृत हो चुके भू-सम्बन्धोंमें सुधार लानेके प्रयास किये गये। सार्वजनिक शिक्षा और विशेषतः उच्चस्तरीय शिक्षाका प्रसार हुआ। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकीके विभिन्न क्षेत्रोंमें भारतको विश्वके समकक्ष लानेके प्रयास प्रारम्भ हुए।

स्वतन्त्रताकी अनुभूति और महात्मा गाँधीके नेतृत्वमें भारतके महान् एवं धर्मसम्मत संग्राममें भाग लेनेके अनुभवसे भारतके लोगोंमें नवप्राणका संचार हुआ। वे अपनी अस्मिता एवं गरिमाको पुनः प्राप्तकर अपने राष्ट्र एवं समाजके पुनर्निर्माणके कार्य में जुट गये।

कृषि एवं जनसंख्या बढ़ने लगी

स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त कृषिक्षेत्र के उत्पादन एवं प्रतिहेक्टेयर उत्पादकतामें तुरन्त सुधार होने लगा। विशेषतः इस कालके पहले १५ वर्षोंमें उत्पादन एवं उत्पादकतामें तीव्र गतिसे संवृद्धि हुई। शीघ्र ही भारतमें अनाजकी उपलब्धि २०० किलोग्राम प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्षके स्तरपर पहुँच गई। अनाजकी इतनी उपलब्धिसे दुर्भिक्ष एवं व्यापक क्षुधासे लोगोंके मरनेकी स्थितिका निवारण तो हो ही गया, परन्तु सब भारतीयोंके लिये दो समय भरपेट खाने और भारतके पशुओंके समुचित पोषणका प्रबन्ध करपाना मात्र इतने अनाजसे सम्भव नहीं था। हम अपनी बढ़ती हुई जनसंख्याके लिये २०० किलोग्राम प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष अनाजका उत्पादन करते रहनेमें सफल हुए हैं। परन्तु भारतका ऐतिहासिक अन्नबाहुल्य अभी हम नहीं लौटा पाये।

ब्रितानी कालके विनाशकारी दुर्भिक्ष स्वतन्त्रता-प्राप्तिके उपरान्त शीघ्र ही अतीतकी बात बन गये। भारतके लोगों और उनके सहज समुदायोंकी गरिमा कुछ स्तरतक लौट आयी। सार्वजनिक कार्योंमें उनकी इच्छा-अनिच्छाकी कुछ सीमातक चिन्ता की जाने लगी। अपने विवेक एवं अपने पारम्परिक नियम-अनुशासनके अनुरूप सार्वजनिक जीवनको चलानेका कुछ साहस वे करने लगे। अपनी सहज दक्षताओंका नियोजन करनेके कुछ आर्थिक अवसर उन्हें प्राप्त होने लगे। भारतके ग्राम-समुदायोंमें किञ्चित् सम्पन्नताका सञ्चार भी होने लगा। सार्वजनिक जीवनके विभिन्न पक्षोंके इस प्रकार स्वस्थ होनेके साथ-साथ भारतकी जनसंख्या भी बढ़ने लगी। और विश्वकी जनसंख्यामें भारतके भागमें गत दो शताब्दियोंसे हो रहा सतत ह्रास कुछ थमने लगा।

औद्योगिक उत्पादन भी बढ़ने लगा

स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त भारतमें उद्योगोंकी पुनःस्थापनाके सुनियोजित प्रयास प्रारम्भ हुए। राज्यने उद्योगोंके लिये आवश्यक मूल ढाँचा खड़ा करनेका उत्तरदायित्व लिया। इस दृष्टिसे लौह-इस्पात, कोयला, विद्युत एवं सीमेंट आदिका उत्पादन करनेके लिये विशाल राजकीय संयन्त्र लगाये गये और इन क्षेत्रोंमें निजी उद्यमको प्रोत्साहित किया गया। दूरसञ्चार एवं यातायातकी व्यवस्थाओंके निर्माणपर भी बल दिया गया। स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्तके पहले दो दशकोंमें भारतने मूल ढाँचेसे सम्बन्धित क्षेत्रोंमें तीव्र गतिसे विकास किया। इस सबसे भारतके औद्योगिक पुनरुत्थानका आधार स्थापित हुआ, यद्यपि किसी स्तरपर पहुँच कर हमारे प्रयास निश्चय ही मन्द पड़ने लगे थे।

आर्थिक पुनरुत्थानके इस प्रकार प्रस्तुत हुए अवसरोंका भारतके लोगोंने भरपूर उपयोग किया। भारतके वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदोंने आधुनिक विज्ञान एवं उद्योगकी नयी विधाओंमें दक्षताका प्रदर्शनकर भारतको आधुनिक विश्वके समकक्ष लानेमें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। विशेषतः नाभिकीय ऊर्जा, अन्तरिक्ष एवं प्रक्षेपास्त्र विज्ञान और धातुओं एवं अन्य नये द्रव्योंसे सम्बन्धित विधाओंमें भारतीयोंने विशिष्ट एवं प्रभावशाली दक्षताका प्रदर्शन किया। आज सूचना-प्रौद्योगिकीके क्षेत्रमें भारतको विश्वमें जो अग्रणी स्थान प्राप्त है वह विभिन्न उच्चप्रौद्योगिकी क्षेत्रोंमें स्थापित इन पूर्ववर्ती क्षमताओंके कारण ही सम्भव हो पाया है। वस्तुतः भारतमें आज अनेक उच्चतकनीकी विधाओंमें विश्वके अद्यतन स्तरके समतुल्य क्षमता उपलब्ध है।

भारतके उद्यमियोंने मौलिक ढाँचेकी उपलब्ध क्षमताओंका उपयोग करते हुए अनेक औद्योगिक वस्तुओंका निर्माण करना प्रारम्भ किया। आज अपनी आवश्यकताकी प्रायः सब औद्योगिक वस्तुएँ हम भारतमें ही बनाते हैं। और भारतसे अनेक औद्योगिक उत्पादों, विशेषतः वस्त्र, चमड़ेकी वस्तुओं, भारी संयन्त्रों और रसायनोंका बड़ी मात्रामें निर्यात होता है।

कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमका उदय होने लगा

औद्योगिक उद्यमके लिये प्रस्तुत होते नये अवसरोंका भारतके कुटुम्बों और उनके समुदायोंने समुचित उपयोग किया। पारस्परिक समर्थन, सहज पारस्परिक विश्वास और सामुदायिक अनुशासनकी अपनी समयसिद्ध परम्पराओंके बलपर भारतीय कुटुम्बों और समुदायोंने विभिन्न प्रदेशोंमें विशिष्ट प्रकारके उद्योगोंकी व्यापक स्थापनामें अद्भुत सफलता प्राप्त की। औद्योगिक क्षेत्रमें कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमोंका पर्याप्त योगदान होने लगा। भारतीय कृषि क्षेत्रमें तो सर्वदा कुटुम्बों और समुदायोंका वर्चस्व रहा ही है।

आज भारतके सकल उत्पादनमें सार्वजनिक एवं निजी औपचारिक क्षेत्रका भाग केवल एक तिहाई है। भारतके सकल उत्पादनका शेष दो-तिहाई भारतके कुटुम्बों और उनके सहज समुदायोंके उद्यम से आता है। कृषि भी इसीमें सम्मिलित है। आज श्रमशील भारतीयोंकी कुल संख्याके ९० प्रतिशतका नियोजन कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमोंमें ही हो रहा है। सार्वजनिक एवं निजी निगमित क्षेत्रमें कुल २ करोड़ ७० लाख भारतीयोंको काम मिलता है। शेष २७ करोड़ श्रमशील भारतीयोंका भरण कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमोंसे ही होता है।

अतीतकी भाँति ही भारतकी अर्थव्यवस्था एकदा पुनः भारतके कुटुम्बों और उनके सहज समुदायोंकी अर्थव्यवस्था बनने लगी है। भारतीय व्यवस्थाके सहज संघटक एवं रचयिता कुटुम्ब एवं समुदाय एकदा पुनः भारतके पुनर्निर्माणके कार्य में जुट गये हैं।

भारतके समुदाय अद्भुत सफलताकी गाथाएँ रच रहे हैं

भारतके भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंमें कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमसे विशिष्ट उद्योगोंमें अद्भुत क्षमताकी स्थापना हुई है। भारतके अनेक नगर-उपनगर इस प्रकारके सहज उद्यमके बलपर विभिन्न प्रकारके औद्योगिक उत्पादनोंके लिये असाधारण सक्षम, सक्रिय एवं मितव्ययी केन्द्रोंके रूप में उभरे हैं। इस सन्दर्भमें पंजाबके लुधियाना, गोबिन्दगढ़ एवं बटाला, तमिलनाडुके तिरुप्पूर, शिवकाशी, भवानी एवं नामक्कल, गुजरातके मोरवी, राजकोट एवं सूरत और महाराष्ट्रके भिवण्डी एवं शोलापुर जैसे नगर देशभरमें विख्यात हैं। लुधियानाके साइकिलों, बटालाकी लेथ-मशीनों, तिरुप्पूरकी होज़री, शिवकाशीके पटाकों, मोरवीकी घड़ियों एवं सूरतके हीरोंका आज भारतकी सब मण्डियोंमें वर्चस्व है और भारतके सकल निर्यातमें इनका बड़ा योगदान है।

अद्भुत सफलताकी ये गाथाएँ अनेक छोटे-छोटे उद्यमोंके पारस्परिक सामञ्जस्यपर आधारित हैं। ये लघु उद्यम कुटुम्ब एवं समुदायके आर्थिक एवं अन्य साधनोंके आधारपर खड़े हुए हैं और इनमें सामञ्जस्य बैठाना कुटुम्ब एवं समुदायके सहज अनुशासन एवं सहज पारस्परिक विश्वासके कारण ही सम्भव हो पाया है। सफलताकी ये गाथाएँ लघुस्तरीय स्वदेशी उद्यमके आधारपर व्यापक औद्योगिक तन्त्र खड़ा करनेकी वृहद् सम्भावनाओंकी ज्वलन्त उदाहरण हैं। सहज स्वदेशी उद्यमके लघुस्तरसे व्यापक तन्त्रमें परिवर्तित होनेकी इस प्रक्रियासे अनेक नगरों-उपनगरों और कतिपय पूरे-के-पूरे प्रदेशोंका रूप-परिवर्तन हो गया है, वे अपेक्षाकृत दरिद्र क्षेत्रोंके मध्य समृद्धिके द्वीपों जैसे दिखने लगे हैं। लुधियाना, कोयम्बत्तूर, तिरुप्पूर अथवा शिवकाशी जैसे नगरोंमें कोई आजीविकासे वञ्चित नहीं है। सुदूर क्षेत्रोंसे शिल्पी एवं कर्मकार ऐसे केन्द्रोंकी ओर आकर्षित होते हैं। वहाँ पहुँच कर वे प्रायः शीघ्र ही स्वयं स्वतन्त्र उद्यम प्रारम्भ कर लेते हैं। यह इन केन्द्रोंमें उपलब्ध अनेक अवसरों और कुटुम्बों एवं समुदायोंके अवलम्ब से ही सम्भव होता है।

ये केन्द्र स्वदेशी उद्यमकी अनन्त सम्भावनाओंकी कहानी कहते हैं। भारतके प्रत्येक प्रदेशमें और प्रत्येक नगर-उपनगरमें हम उद्यम एवं उत्कृष्टताके इन केन्द्रों जैसी गाथाएँ रच पायें तो भारत शीघ्र ही विश्वके समृद्धतम देशोंकी पंक्तिमें आ खड़ा होगा।

सफलताकी गाथाएँ : तिरुप्पूरका होज़री उद्योग

पश्चिमी तमिलनाडुमें कोयम्बत्तूरके अपेक्षाकृत बड़े नगरसे प्रायः ४० किलोमीटर दूर एक छोटा-सा नगर तिरुप्पूर है। भारतके अनेक छोटे-छोटे नगरोंके समान प्रायः ग्रामीण परिवेश लिये तिरुप्पूर किसी अन्य उपनगरसे बहुत भिन्न नहीं दिखाई देता। स्थान-स्थान पर पुते होज़री वस्त्रोंके बड़े-बड़े विज्ञापन भी अन्य नगरों जैसे ही दिखते हैं। तिरुप्पूरकी छोटी-बड़ी सब गलियाँ इस विस्तारके अन्य नगरोंकी भाँति कुछ सोई-सी ही दिखाई देती हैं।

यह साधारण-सा दिखनेवाला नगर वास्तवमें भारतके होज़री उत्पादनका केन्द्र है। यहाँ प्रतिवर्ष प्रायः ५० अरब रुपये मूल्यका उत्पादन होता है। यहाँसे ३० अरब रुपये मूल्यकी होज़रीकी वस्तुएँ विदेशोंमें बेची जाती हैं। इस नगरकी शान्त-सी दिखती गलियोंमें स्थित प्रत्येक घरमें होज़री उद्योगसे सम्बन्धित कोई न कोई उद्यम चलता है। इस नगरमें किसीके लिये जीविकाका कोई अभाव नहीं है। वस्तुतः पूरे कोयम्बत्तूर जनपदमें कर्मकारोंकी आवश्यकता सदैव बनी रहती है।

तिरुप्पूरका सकल उत्पादन मूल्यमें भारतके सबसे बड़े मोटरकार निर्माताके सकल उत्पादन के समतुल्य है। भारतकी सबसे बड़ी कपड़ा मिलोंके सकल उत्पादनकी अपेक्षा तो तिरुप्पूरके सकल उत्पादनका मूल्य कई गुणा अधिक है। और तिरुप्पूरसे जितने मूल्यका निर्यात होता है उसकी समानता न तो बड़े-से-बड़े मोटरकार निर्माता कर पाते हैं और न बड़ी-से-बड़ी कपड़ा मिलें।

इस व्यापक स्तरका उद्योग अनेक छोटे-छोटे उद्यमियोंके सम्मिलित प्रयाससे खड़ा हुआ है। इनमें से अधिकतर दो-तीन दशक पूर्व अपनी अल्प पूँजी और अपने कुटुम्ब एवं समुदायके समर्थनका संबल लेकर इस उद्योगमें प्रवृत्त हुए थे। उन्होंने अपना कार्य अतिलघु स्तरपर किसी एकाध संयन्त्रकी स्थापनासे ही प्रारम्भ किया था। उस लघु स्तरसे प्रारम्भ कर इस व्यापक वैश्विक स्तरपर वे वैयक्तिक अनुशासन, सतत श्रम, कुटुम्ब एवं समुदायसे प्राप्त पारस्परिक समर्थन और छोटे-छोटे नगरोंमें विशेषतः व्याप्त स्पर्धा एवं अनुकरणके भावसे ही पहुँच पाये हैं। तिरुप्पूर वस्तुतः नितान्त स्वदेशी उद्यमका उत्कृष्ट उदाहरण है।

सफलताकी गाथाएँ : शिवकाशीका पटाका उद्योग

शिवकाशी सुदूर दक्षिणके अत्यन्त शुष्क क्षेत्रमें स्थित है। विरुद्धुनगर, तूत्तुकुडी एवं रामनाथपुरम् जनपदोंके कुछ भाग इस क्षेत्रमें पड़ते हैं। ये क्षेत्र पश्चिमी घाटकी ओटमें है और उत्तरी घाटों से पर्याप्त दूर। यहाँ न तो जलगर्भित दक्षिण-पश्चिमी पवनें पहुँच पाती हैं और न ही उत्तर-पूर्वी पवनें। इस क्षेत्रमें स्थित शिवकाशी और इसके आसपासके उपनगर समुद्रतटसे बहुत दूरी पर हैं। अतः इन नगरों-उपनगरोंकी जलवायु विशेषतः उष्ण एवं शुष्क है।

शिवकाशीके लोगोंने अपने उद्यमसे प्रकृतिकी इस प्रतिकूलताको विशिष्ट अनुकूलताका स्वरूप दे दिया है। यहाँ उन्होंने पटाके एवं दियासिलाई बनानेका उद्योग स्थापित किया है जिसके लिये यहाँकी जलवायु सर्वोत्तम है। भारतमें विशेषतः दीपावलीपर्वके अवसरपर बड़ी मात्रामें छोड़े जाने वाले प्रायः समस्त पटाके शिवकाशी और इसके आसपासके छोटे-छोटे नगरोंसे ही आते हैं। और भारतमें उपयुक्त प्रायः समस्त दियासिलाइयाँ भी यहीं बनती हैं।

इस व्यापक उद्योगका प्रारम्भ दो उद्यमी नाडार बन्धुओंने बीसवीं शताब्दीके तीसरे दशकमें लघुस्तरपर ही किया था। कोलकातामें व्यापार करते हुए उनका पटाका बनानेकी तकनीकसे परिचय हुआ था। पारस्परिक समर्थन, स्पर्धा एवं अनुकरणकी सामुदायिक प्रक्रियाओं और इस क्षेत्रके विशिष्ट वातावरणके कारण यह क्षेत्र शीघ्र ही पटाका एवं दियासिलाई उत्पादनका एकमात्र केन्द्र बन गया।

इस क्षेत्रके दियासिलाई उद्योगमें अब दस अरब रुपये मूल्यका वार्षिक उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त पटाका उद्योगका साढ़े चार अरब रुपये मूल्यका वार्षिक उत्पादन है। पटाकों और दियासिलाईकी डिब्बियोंके लेबल आदि बनानेके लिये यहाँ छपाई उद्योग प्रारम्भ हुआ। आज शिवकाशी उत्कृष्ट रंगीन छपाईके लिये भारतका सबसे बड़ा केन्द्र है।

प्राकृतिक सम्पदाकी दृष्टिसे प्रायः वञ्चित यह क्षेत्र छोटे नगरोंके कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित सहज स्वदेशी उद्यमसे इस प्रकार देशके समृद्धतम क्षेत्रोंमें से एक बन गया है।

सफलताकी गाथाएँ : कोविलपट्टी एवं सात्तूरका दियासिलाई उद्योग

दियासिलाई एवं पटाका उद्योग प्रारम्भ करनेवाला शिवकाशी अपने क्षेत्रका पहला नगर था। अब इस नगरके उद्योग लघु स्तरसे पर्याप्त ऊपर उठ चुके हैं। वहाँकी अधिकतर इकाइयोंमें अब अपेक्षाकृत बड़े स्तरपर एवं उच्च प्रौद्योगिकीपर आधारित उत्पादन होता है। शिवकाशीके पड़ोसी कोविलपट्टी एवं सात्तूर जैसे अनेक छोटे-छोटे नगर कुटीर एवं लघु स्तरपर दियासिलाई बनाते हैं, यद्यपि इन छोटे नगरोंमें भी कतिपय बड़ी इकाइयाँ दिख जाती हैं। इन नगरोंका प्रायः प्रत्येक घर दियासिलाई बनानेकी औद्योगिक इकाई बन गया है।

दियासिलाई बनाना अत्यन्त श्रमसाध्य कार्य है। पहले एक-एक सिलाई लेकर उसे लकड़ीके खाँचोंमें भरा जाता है। इन खाँचोंको हाथसे पिघली हुई मोममें डुबोया जाता है। तब हाथसे चलने वाले एक साधारण-से यन्त्रकी सहायतासे सिलाइयोंके सिरोंपर ज्वलन-शील मिश्रण चढ़ाया जाता है। दियासिलाईकी खाली डिब्बियाँ भी हाथसे बनती हैं, हाथसे डिब्बियोंके दो ओर तीलियाँ घिसनेवाली सतह बनाई जाती है। बनी हुई दियासिलाइयोंको सुखाकर हाथसे डिब्बियोंमें भरा जाता है। तदुपरान्त डिब्बियोंपर लेबल चिपकाये जाते हैं और इन्हें थोकके बड़े पैकेटोंमें सज्जित किया जाता है।

इस क्षेत्रके प्रायः सब कुटुम्ब इन विविध श्रमसाध्य कार्योंमें भाग लेते हैं। खाँचोंमें सिलाइयाँ भरनेका कार्य अधिकतर घरोंमें ही होता है। खाली खाँचे घरोंमें पहुँचाए जाते हैं और भरे हुए खाँचे वहाँसे एकत्र कर लिए जाते हैं। इस प्रकार इस उद्योगसे न केवल यहाँके नगर-उपनगर अपितु इस क्षेत्रके सब घर औद्योगिक गतिविधियोंके केन्द्र बन गये हैं।

छोटे नगरोंके कुटुम्ब एवं समुदायपर आधारित उद्यमसे औद्योगिक राष्ट्र बनते हैं

तमिलनाडुके तिरुप्पूर, शिवकाशी, सात्तूर एवं कोविलपट्टी जैसे छोटे नगरोंके महान् उद्यम किसी भी राष्ट्रके उद्योगका प्रमुख आधार होते हैं। ऐसे छोटे-छोटे नगरोंके सघन उद्यममें ही राष्ट्रकी सहज उद्यमशीलता एवं तकनीकी दक्षता प्रस्फुटित होती है, समस्त लोगों एवं उनके सहज समुदायोंमें निहित विभिन्न प्रकारके कौशल एवं सामर्थ्यकी व्यापक अभिव्यक्तिके अवसर प्रस्तुत होते हैं। आजके विश्वके अनेक महान् औद्योगिक साम्राज्य किसी छोटे नगरके कुटुम्ब एवं समुदायसे पोषित किसी छोटे उद्यमसे ही प्रारम्भ हुए थे, और आज भी वे अनेक प्रकारके विशिष्ट कौशलपूर्ण कार्योंके लिये छोटे-छोटे नगरोंमें उपलब्ध सहज दक्षताओंपर ही निर्भर करते हैं।

भारतके छोटे नगरोंके लोग विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रोंमें विश्वकी प्रतिस्पर्धामें खड़े होनेको उद्यत हैं। उनमें आजके विश्वको समझनेकी एषणा है। अपने उद्यम एवं दक्षताओंके प्रति वे आश्वस्त हैं। तिरुप्पूरके युवा उद्यमी अन्तरराष्ट्रीय वस्त्र-बाजारकी सतत परिवर्तित होती अपेक्षाओंसे और वस्त्र-उद्योगकी अद्यतन तकनीकोंसे अवगत रहनेके भरसक प्रयास करते हैं। अपने अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धियोंकी क्षमताओं एवं दुर्बलताओंसे वे परिचित हैं। उन्हें उचित प्रोत्साहन एवं वातावरण प्राप्त हो पाये तो वे विश्व बाजारमें अपना वर्चस्व स्थापित करनेमें सक्षम हैं।

शेष अगले पृष्ठपर...